

परा एवं अपरा विद्या की शैक्षिक प्रासंगिकता

प्रिया त्रिपाठी¹ ; प्रो. नन्दलाल मिश्रा²DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23307459>

Review: 03/09/2026

Acceptance: 08/09/2026

Publication: 15/10/2026

सारांश: भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को केवल पढ़ने-लिखने या किसी विषय का ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं माना गया है। शिक्षा का संबंध मनुष्य के संपूर्ण जीवन से है। वह व्यक्ति को बाहरी संसार को समझने के साथ-साथ स्वयं को जानने, अपने विचारों को परिष्कृत करने और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने की दिशा भी प्रदान करती है। इसी व्यापक दृष्टि में परा विद्या और अपरा विद्या की अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण दिखाई देती है। मुण्डक उपनिषद् में ज्ञान के इन दोनों रूपों का उल्लेख मिलता है। अपरा विद्या के अंतर्गत ऐसे ज्ञान को रखा गया है जो व्यक्ति को संसार, शास्त्रों और विभिन्न विषयों की समझ प्रदान करता है। यह ज्ञान जीवन को व्यवस्थित और व्यावहारिक बनाने में सहायक होता है। दूसरी ओर, परा विद्या वह ज्ञान है जो मनुष्य को उस परम सत्य की ओर ले जाता है जिसे उपनिषद् 'अक्षर' के रूप में स्वीकार करता है। इस प्रकार एक ओर अपरा विद्या बाहरी जीवन को समझने और सँवारने में सहायक है, तो दूसरी ओर परा विद्या व्यक्ति को अपने भीतर देखने की प्रेरणा देती है। आज की शिक्षा में विज्ञान, तकनीक, रोजगार और कौशल का महत्व लगातार बढ़ रहा है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि इनके बिना आधुनिक जीवन की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन है। फिर भी केवल बाहरी उपलब्धियाँ मनुष्य को पूर्ण संतोष और सार्थक जीवन प्रदान कर सकें, यह आवश्यक नहीं। जीवन में विवेक, मूल्य, आत्मचेतना, संयम और मानवीय संवेदनाओं की भी आवश्यकता होती है। इसी संदर्भ में परा और अपरा विद्या की उपनिषद्-प्रदत्त अवधारणा आज भी विचारणीय है। दोनों के संतुलित समन्वय से ऐसी शिक्षा की कल्पना की जा सकती है जो व्यक्ति को केवल योग्य ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार, विवेकशील, संवेदनशील और आत्मजागरूक मनुष्य बनाने में भी सहायक हो। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी शैक्षिक दृष्टि को समझने और वर्तमान संदर्भ में उसकी उपयोगिता को स्पष्ट करने का प्रयास है।

प्रमुख शब्द: परा विद्या, अपरा विद्या, उपनिषद्, भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा, आत्मज्ञान, मूल्य शिक्षा, समग्र विकास।

१. प्रस्तावना:

उपनिषदीय शिक्षा को मनुष्य के जीवन के सही राह देने वाली सर्वोत्तम शिक्षा माना गया है। यह शिक्षा का अर्थ केवल शब्दों को तैयार करने, व पेट भरने, किताबी व कौशल युक्त, ज्ञान तक सीमित न रहकर मानव जीवन के यथार्थ लक्ष्य की ओर अग्रसित होकर अपने जीवात्मा को परम चेतन प्रकाश से प्रतिबिंबित करना है अर्थात् मानव के बाह्य विकास के साथ-साथ आंतरिक विकास के उस परम स्तर तक की यात्रा करना है जहाँ पर आकर सब निर्लिप्त हो जाता है फिर मानव मन की विकृतियों (काम, क्रोध, लोभ,

¹ शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, इंडिया

² प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, इंडिया

मोह, मद मत्सर) से मुक्त एक्य दृष्टि सत चित आनंद में विचरण करते हुए मानव के यथार्थ लक्ष्य को प्राप्त करता है। उपनिषद् भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian knowledge system) के ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिनमें- जीवन, आत्मा, ब्रह्म, ज्ञान, सत्य और मानव अस्तित्व से जुड़े अनेक प्रकार के प्रश्नों एवं समस्याओं के समाधान हैं। इसी संदर्भ में परा विद्या और अपरा विद्या की अवधारणा विशेष महत्व रखती है। मुण्डक उपनिषद् में विद्या के इन दोनों रूपों का उल्लेख मिलता है। अपरा विद्या के अंतर्गत विभिन्न शास्त्रों और विषयों से संबंधित ज्ञान आता है, जबकि परा विद्या वह ज्ञान है जिसके माध्यम से अक्षर तत्त्व का बोध होता है। इस विभाजन के पीछे ज्ञान को छोटा-बड़ा बताने की अपेक्षा उसके अलग-अलग उद्देश्यों और स्तरों को समझने का प्रयास दिखाई देता है। उपनिषदों की प्रमुख विशेषता यह है कि वह यथार्थ जीवन के ज्ञान देने के अतिरिक्त मानव को स्वयं विचार करने, अपने आत्मा के रहस्य, मन की एकाग्रता को समझने के लिए प्रेरणा देते हैं। उपनिषदों में गुरु शिष्य के माध्यम से पप्रश्नोत्तर के द्वारा मानव के गूढ़ रहस्यों (profound mystery) को उजागर किया गया है। जिसे आधुनिक शिक्षा में या आधुनिक पाठ्यक्रम (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा) में कहीं भी शामिल नहीं किया गया है। स्पष्ट है हमारे मूल्य परंपरा में शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करना व तकनीकी जानना, तक सीमित होने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि जिज्ञासा, चिंतन एवं आत्मबोध की यात्रा है। वर्तमान समय में शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है- प्रबंधन, भाषा, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा और विभिन्न व्यावसायिक कौशल, फिर भी मनुष्य में तनाव, अवसाद, चिंता, ईर्ष्या आदि की बहुलता देखने को मिलती है। युवाओं में बढ़ते प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, तनाव ग्रस्त जीवन से आत्महत्या जैसी परिस्थितियां निर्मित हो रही हैं।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु परा विद्या व अपरा विद्या के अवधारणा पर पुनर्विचार कर दोनों की शिक्षा के संतुलन को संदर्भित किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में परा एवं अपरा विद्या की आवश्यक अवधारणा को भारतीय ज्ञान परंपरा के उपनिषदीय शिक्षा के संदर्भ में समझने व आत्मसात करने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह उद्देश्य रखा गया है कि इन दो ज्ञानमार्गों (परा एवं अपरा विद्या) से वर्तमान में चल रही शिक्षा प्रणाली को क्या दिशा मिल सकती है और इन दोनों मार्गों के संतुलन से मानव के सर्वांगीण विकास की कल्पना किस प्रकार की जा सकती है।

२. परा विद्या की अवधारणा

‘परा’ शब्द का सामान्य अर्थ है—उच्च, श्रेष्ठ या आगे ले जाने वाला। परा विद्या का अर्थ मुंडकोपनिषद् में है— आत्म बोध एवं परम सत्य के ज्ञान से संबंधित। परम सत्य— अक्षर ब्रह्म; जिसका कोई क्षण संभव नहीं है। जो नित्य, विभु, व्यापक, सर्वदा, सर्वगत, अत्यंत सूक्ष्म है। भारतीय ज्ञान परंपरा में परा विद्या का संबंध उस ज्ञान से माना गया है जो मनुष्य को केवल बाहरी संसार की जानकारी नहीं देता, बल्कि उसे अपने अस्तित्व और जीवन के गहरे सत्य (अक्षर ब्रह्म) को समझने की दिशा में ले जाता है। इस दृष्टि से परा विद्या को आत्मबोध और परम सत्य के ज्ञान से संबंधित माना गया है। परा विद्या की स्पष्ट चर्चा मुण्डक उपनिषद् में इस प्रकार मिलती है- शौनक नामक जिज्ञासु जब अंगिरा ऋषि से पूछते हैं कि ऐसा क्या है जिसको जानने के बाद फिर कुछ जानने को शेष नहीं बचता है, तब ऋषि ज्ञान की दो विद्याओं को वेदितव्य बताते हैं— परा और अपरा। उपनिषद् में कहा गया है—

“द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।”

अर्थात् ब्रह्म को जानने वाले विद्वान दो प्रकार की विद्याओं के बारे में बताते हैं— परा और अपरा। इसके आगे उपनिषद् परा विद्या का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहता है—

“अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।”

अर्थात् वह परा विद्या है जिसके द्वारा उस अक्षर तत्त्व को जाना जाता है। यहाँ ‘अक्षर’ से आशय उस अविनाशी तत्त्व से है जो परिवर्तनशील संसार से परे माना गया है। इस प्रकार परा विद्या का उद्देश्य केवल बाहरी वस्तुओं के बारे में जानना नहीं, बल्कि ‘मैं कौन हूँ?’, ‘जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है?’ और ‘सत्य क्या है?’ जैसे प्रश्नों पर विचार करना भी है। यह ज्ञान व्यक्ति को अपने भीतर देखने, अपने अनुभवों पर चिंतन करने और जीवन के प्रति अधिक जागरूक दृष्टि विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

परा विद्या का शैक्षिक महत्व: शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति को केवल कुशल बनाना नहीं, बल्कि उसे विवेकशील और जिम्मेदार बनाना भी है। परा विद्या इसी आंतरिक विकास की ओर संकेत करती है। इसके माध्यम से शिक्षा में आत्मचिंतन, मूल्यबोध, संयम, सत्यनिष्ठा और आत्मजागरूकता जैसे पक्षों को स्थान मिलता है। आज विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं और नई- नई तकनीकों का उपयोग करना सीखते हैं। यह ज्ञान उनके व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक है। लेकिन यदि व्यक्ति के पास ज्ञान और कौशल तो हो, परंतु उसका उपयोग किस उद्देश्य से करना है, इसकी समझ न हो, तो शिक्षा अधूरी रह सकती है। परा विद्या इसी प्रश्न को सामने लाती है कि ज्ञान के साथ विवेक और जीवन-मूल्यों का विकास भी आवश्यक है। इस दृष्टि से परा विद्या को ऐसी शिक्षा के रूप में समझा जा सकता है जो व्यक्ति को स्वयं को समझने, अपने व्यवहार का निरीक्षण करने, उचित- अनुचित में अंतर करने और जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बनाने की दिशा देती है। इसका उद्देश्य संसार से दूर करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर ऐसी समझ विकसित करना है जिससे वह संसार में रहते हुए भी अपने जीवन के प्रति सजग और उत्तरदायी रह सके। अतः परा विद्या भारतीय शैक्षिक चिंतन में ज्ञान के उस आयाम का प्रतिनिधित्व करती है जो बाहरी उपलब्धियों से आगे बढ़कर मनुष्य के आंतरिक विकास और आत्मबोध को महत्व देता है।

3. अपरा विद्या की अवधारणा

‘अपरा’ शब्द का सामान्य अर्थ है— दूसरी या अपेक्षाकृत निम्न स्तर की विद्या। यहाँ ‘निम्न’ शब्द का अर्थ कम महत्वपूर्ण या अनावश्यक नहीं समझना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा में अपरा विद्या का संबंध मुख्यतः उस ज्ञान से है - जो मनुष्य को संसार, पेट भरण, शास्त्रों, प्रकृति और विभिन्न विषयों को समझने में सहायता करता है। यह ज्ञान व्यक्ति के व्यावहारिक और सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

“तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।”

— मुण्डक उपनिषद्, 1.1.5

मुण्डक उपनिषद् में परा विद्या के साथ अपरा विद्या का भी स्पष्ट उल्लेख मिलता है। उपनिषद् में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष को अपरा विद्या के अंतर्गत बताया गया है। इससे यह समझ में आता है कि उस समय भी ज्ञान के विभिन्न विषयों और उनके अध्ययन को व्यवस्थित रूप से महत्व दिया जाता था। अपरा विद्या को व्यापक अर्थ में **लौकिक, शास्त्रीय और व्यावहारिक ज्ञान** के रूप में समझा जा सकता है। मनुष्य अपने आसपास की दुनिया को समझने, प्रकृति के नियमों को जानने, भाषा का प्रयोग करने, गणना करने, सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने तथा विभिन्न कार्यों को कुशलता से करने के लिए जिस ज्ञान को प्राप्त करता है, वह इसी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। आज के समय में अपरा विद्या का स्वरूप और भी विस्तृत हो गया है। विज्ञान, गणित, चिकित्सा, तकनीक, कंप्यूटर, प्रबंधन, कृषि, भाषा, साहित्य, समाजशास्त्र तथा विभिन्न व्यावसायिक विषयों का ज्ञान व्यक्ति के जीवन को व्यावहारिक आधार प्रदान करता है। आधुनिक शिक्षा में इन विषयों के अध्ययन से विद्यार्थी अपने आसपास की परिस्थितियों को समझने और जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होते हैं।

४. अपरा विद्या का शैक्षिक महत्व

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि व्यक्ति अपने परिवेश को समझ सके और अपने ज्ञान का उपयोग समाज तथा जीवन के विकास के लिए कर सके। इस दृष्टि से अपरा विद्या का विशेष महत्व है। यह व्यक्ति में **बौद्धिक क्षमता, तर्कशक्ति, विषयगत ज्ञान, कौशल और कार्य-कुशलता** का विकास करती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान हमें प्रकृति की प्रक्रियाओं को समझने में सहायता करता है, गणित तार्किक सोच विकसित करता है और तकनीकी शिक्षा हमें आधुनिक साधनों का उपयोग करना सिखाती है। इसी प्रकार भाषा और साहित्य व्यक्ति को अभिव्यक्ति तथा सामाजिक संवाद की क्षमता प्रदान करते हैं। इसलिए अपरा विद्या को केवल बाहरी ज्ञान मानकर उसकी उपेक्षा करना उचित नहीं होगा। हालाँकि केवल विषयगत और व्यावहारिक ज्ञान ही शिक्षा का अंतिम उद्देश्य नहीं हो सकता। ज्ञान का उपयोग किस प्रकार किया जाए और उसका उद्देश्य क्या हो, इसके लिए विवेक और मूल्यबोध भी आवश्यक हैं। यहीं पर अपरा विद्या का संबंध परा विद्या से जुड़ता है। अपरा विद्या व्यक्ति को **‘क्या और कैसे जानना है’** की दिशा देती है, जबकि परा विद्या उसे **‘ज्ञान का जीवन में क्या अर्थ है’** जैसे प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार अपरा विद्या मनुष्य के बाहरी जीवन को सक्षम और व्यवस्थित बनाने में सहायक है। यदि इसे परा विद्या से प्राप्त आत्मचेतना और मूल्यबोध के साथ जोड़ा जाए, तो शिक्षा व्यक्ति के **बौद्धिक, व्यावहारिक, नैतिक और आंतरिक विकास** को एक साथ आगे बढ़ाने का माध्यम बन सकती है।

५. आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में परा एवं अपरा विद्या की प्रासंगिकता

समय के साथ शिक्षा का स्वरूप बदलता रहा है। आज शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी विज्ञान, तकनीक, भाषा, गणित, चिकित्सा, प्रबंधन और अनेक व्यावसायिक क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। आधुनिक जीवन में इस प्रकार के ज्ञान की अपनी उपयोगिता

है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमताओं को विकसित करता है और बदलती हुई परिस्थितियों के साथ आगे बढ़ने के लिए तैयार होता है। इस दृष्टि से अपरा विद्या का व्यावहारिक पक्ष आज भी दिखाई देता है। लेकिन शिक्षा केवल जानकारी और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है। विद्यार्थी के सामने यह प्रश्न भी रहता है कि वह अपने ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करे, उसके जीवन का उद्देश्य क्या हो और समाज के प्रति उसकी क्या जिम्मेदारी है। इन प्रश्नों का संबंध व्यक्ति के आंतरिक विकास से है। यहीं पर परा विद्या की अवधारणा आधुनिक शिक्षा के लिए उपयोगी दिखाई देती है। आज तकनीकी साधनों ने सीखने के अवसरों को बहुत बढ़ा दिया है। विद्यार्थी कुछ ही समय में बड़ी मात्रा में जानकारी प्राप्त कर सकता है। परंतु जानकारी का बढ़ना और ज्ञान का जीवन में सही रूप से उपयोग करना एक ही बात नहीं है। व्यक्ति के भीतर विवेक, धैर्य, आत्मसंयम और सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास भी आवश्यक है। परा विद्या इसी आंतरिक पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता: आधुनिक शिक्षा में विषयगत ज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों को भी स्थान देना आवश्यक है। सत्यनिष्ठा, करुणा, सह-अस्तित्व, जिम्मेदारी, आत्मसंयम और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा देते हैं। केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना शिक्षा की पूर्ण सफलता नहीं मानी जा सकती; शिक्षा का प्रभाव व्यक्ति के आचरण और जीवन-दृष्टि में भी दिखाई देना चाहिए। परा विद्या की अवधारणा शिक्षा को इसी आंतरिक परिवर्तन से जोड़ती है। यह व्यक्ति को अपने विचारों और व्यवहार को देखने तथा अपने भीतर के विकास पर ध्यान देने की प्रेरणा देती है।

कौशल और आत्मचेतना का संतुलन: अपरा विद्या से व्यक्ति में ज्ञान और कौशल विकसित होते हैं, जबकि परा विद्या आत्मचेतना और विवेक के विकास की ओर संकेत करती है। वर्तमान शिक्षा में इन दोनों के बीच संतुलन आवश्यक है। विद्यार्थी को अपने विषय में दक्ष होने के साथ यह समझ भी विकसित करनी चाहिए कि उसके ज्ञान और कौशल का उपयोग समाज तथा मानव जीवन के लिए किस प्रकार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, तकनीकी ज्ञान किसी व्यक्ति को नई तकनीक विकसित करने की क्षमता दे सकता है, लेकिन उसका उपयोग जिम्मेदारी के साथ करना आवश्यक है। इसी प्रकार विज्ञान का ज्ञान प्रकृति को समझने में सहायता करता है, परंतु प्रकृति के प्रति संवेदनशील दृष्टि भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

समग्र व्यक्तित्व विकास: शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के विभिन्न पक्षों का संतुलित विकास करना है। बौद्धिक क्षमता के साथ भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिक समझ और आत्मचेतना भी आवश्यक हैं। परा एवं अपरा विद्या की अवधारणा इस समग्र दृष्टि को समझने का एक आधार प्रदान करती है। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा में अपरा विद्या को ज्ञान और कौशल का आधार तथा परा विद्या को आत्मचिंतन, मूल्यबोध और विवेक के विकास का आधार माना जा सकता है। दोनों का संतुलित समन्वय ऐसी शिक्षा की दिशा में ले जा सकता है जिसमें विद्यार्थी केवल रोजगार के लिए तैयार व्यक्ति न बने, बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और विवेकशील मनुष्य के रूप में भी विकसित हो।

६. भारतीय ज्ञान परंपरा में परा एवं अपरा विद्या का शैक्षिक महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को जीवन से अलग करके नहीं देखा गया। ज्ञान का उद्देश्य केवल किसी विषय में दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति को अपने जीवन और समाज के प्रति जागरूक बनाना भी रहा है। परा एवं अपरा विद्या की अवधारणा इसी

व्यापक शैक्षिक दृष्टि को सामने रखती है। इसमें एक ओर बाहरी जगत और विभिन्न विषयों को समझने का प्रयास है, तो दूसरी ओर स्वयं को जानने और जीवन के गहरे अर्थ को समझने की जिज्ञासा भी है। अपरा विद्या का महत्व इस बात में है कि यह व्यक्ति को संसार के साथ प्रभावी रूप से जुड़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। भाषा, विज्ञान, गणित, तर्क, कला और विभिन्न व्यावसायिक विषयों का अध्ययन व्यक्ति की बौद्धिक एवं व्यावहारिक क्षमताओं को विकसित करता है। समाज के विकास में भी इसी प्रकार के ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परा विद्या शिक्षा के उस पक्ष को सामने लाती है जो व्यक्ति के आंतरिक विकास से संबंधित है। आत्मचिंतन, विवेक, आत्मसंयम, सत्य की खोज और मूल्यबोध इसके महत्वपूर्ण पक्ष हैं। इसके माध्यम से शिक्षा केवल यह नहीं सिखाती कि संसार में किस प्रकार कार्य करना है, बल्कि यह प्रश्न भी उठाती है कि *मनुष्य के जीवन का उद्देश्य क्या है और उसके ज्ञान का उपयोग किस दिशा में होना चाहिए।*

दोनों विद्याओं का महत्व तब और बढ़ जाता है जब उन्हें एक-दूसरे के पूरक रूप में देखा जाए। आधुनिक शिक्षा में विज्ञान और तकनीक का ज्ञान आवश्यक है, लेकिन उस ज्ञान के साथ मानवीय संवेदना और जिम्मेदारी का होना भी आवश्यक है। इसी प्रकार नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा तभी अधिक प्रभावी हो सकती है जब व्यक्ति अपने समय, समाज और परिस्थितियों को समझने के लिए आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान भी रखता हो।

इस दृष्टि से परा एवं अपरा विद्या शिक्षा के दो महत्वपूर्ण आयामों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अपरा विद्या व्यक्ति को संसार को समझने और उसमें कार्य करने की क्षमता देती है, जबकि परा विद्या उसे अपने भीतर देखने और अपने ज्ञान को उचित दिशा देने की चेतना प्रदान करती है। दोनों के संतुलन से शिक्षा अधिक व्यापक और जीवनोपयोगी बन सकती है। आज जब शिक्षा में ज्ञान, कौशल और तकनीकी दक्षता को विशेष महत्व दिया जा रहा है, तब मानवीय मूल्यों और आत्मचेतना को भी शिक्षा का हिस्सा बनाए रखना आवश्यक है। इसी कारण परा एवं अपरा विद्या की अवधारणा केवल प्राचीन दार्शनिक विचार के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान शिक्षा के लिए भी एक विचारणीय आधार के रूप में देखी जा सकती है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा की इस अवधारणा से यह संकेत मिलता है कि शिक्षा का उद्देश्य 'जानना' और 'करना' जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही 'समझना' और 'सही दिशा में जीना' भी महत्वपूर्ण है। यही समन्वित दृष्टि शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास से जोड़ती है।

७. निष्कर्ष

परा एवं अपरा विद्या की अवधारणा भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान के व्यापक स्वरूप को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है। मुण्डक उपनिषद् में इन दोनों विद्याओं का उल्लेख केवल ज्ञान के दो अलग-अलग वर्गों के रूप में नहीं किया गया है, बल्कि इनके माध्यम से ज्ञान के बाहरी और आंतरिक दोनों पक्षों की ओर संकेत मिलता है। अपरा विद्या मनुष्य को विभिन्न विषयों, शास्त्रों और संसार से संबंधित ज्ञान प्रदान करती है, जबकि परा विद्या उसे आत्मबोध और परम सत्य की खोज की ओर ले जाती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विज्ञान, तकनीक, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल का महत्व स्वाभाविक रूप से बढ़ा है। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने और समाज के विकास में योगदान देने योग्य बनता है। लेकिन शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान और रोजगार तक सीमित रहने पर उसके मानवीय पक्ष की उपेक्षा हो सकती है। व्यक्ति में विवेक, आत्मचेतना,

नैतिकता, संवेदना और जिम्मेदारी का विकास भी शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है। इस दृष्टि से परा एवं अपरा विद्या को एक-दूसरे का विरोधी मानने के बजाय **पूरक** रूप में समझना अधिक सार्थक है। अपरा विद्या व्यक्ति को संसार में कार्य करने की क्षमता देती है और परा विद्या उसके भीतर उस क्षमता के उचित उपयोग के लिए आवश्यक चेतना एवं विवेक विकसित करने की दिशा दिखाती है। दोनों का संतुलन शिक्षा को अधिक व्यापक बना सकता है। अतः आज की शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा की इस दृष्टि से प्रेरणा लेते हुए ऐसी शिक्षा पर विचार किया जा सकता है जो विद्यार्थी के बौद्धिक और व्यावहारिक विकास के साथ उसके नैतिक, सामाजिक और आंतरिक विकास को भी महत्व दे। ऐसी शिक्षा व्यक्ति को केवल **कुशल और योग्य** बनाने के साथ-साथ उसे **जिम्मेदार, संवेदनशील और विवेकशील मनुष्य** बनने में भी सहायता कर सकती है। यही परा एवं अपरा विद्या की शैक्षिक अवधारणा की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता है।

संदर्भ:

मुण्डक उपनिषद्, उपनिषद्-साहित्य, गोरखपुर: गीताप्रेस ।

राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, (2008). *The Principal Upanishads*. New Delhi: HarperCollins Publishers India.

Radhakrishnan, S. (1929). *Indian Philosophy, Vol. I*. London: George Allen & Unwin.

Hiriyanna, M. (1993). *Outlines of Indian Philosophy*. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers.

Dasgupta, S. (1975). *A History of Indian Philosophy, Vol. I*. Cambridge: Cambridge University Press.

Sharma, Chandradhar. (2000). *A Critical Survey of Indian Philosophy*. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers.

Tiwari, K. N. (1998). *Classical Indian Ethical Thought*. Motilal Banarsidass Publishers, Delhi.

Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India*. Banaras: Nand Kishore & Bros.

Kapur, J. N. (Ed.). (2005). *Indian Knowledge Systems: Concepts and Perspectives*. New Delhi: D.K. Printworld.

Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India, New Delhi.